केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारह)
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : Hindi Core

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Friday, 18/03/11

... answering the paper : Hindi

... Code No. as written on the top ... : 2/2

... supplementary answer-book(s) used : Nil

... tick the category

B D H S C

... Handicapped ...

हां / नहीं
Yes / No : No

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

खण्ड - ग

उत्तर - 7

क) 'रोपाई क्षण की, कटाई अनंतता की' - इसका भाव यह है कि किसी कवि या रचनाकार के मन में किसी दिव्य-प्रेरणा से किसी एक निश्चित समय पर ही भाव रूपी बीज जन्म लेते हैं और वह रचना करता है। परंतु उसकी रचना का प्रभाव सदियों तक बना रहता है। अर्थात् यदि किसी रचना को पाठक अनेक वर्षों बाद भी पढ़े तो उसका प्रभाव उतना ही होगा और वह आनंद कभी समाप्त नहीं होगा, वह शाश्वत है, अनंत है।

ख) रचनाकार और रचना के संदर्भ में पहली तीन पंक्तियों का आशय यह है कि जब भाव रूपी बीज को बोते हैं और वह एक रचना के रूप में परिवर्तित होता है तो उसमें से दिव्य-रस और आनंद की अनुभूति होती है। उस रचना को पढ़ने से अमृत रूपी आनंद की प्राप्ति होती है। यह अमृत रूपी आनंद असमाप्य होती है।

4

ग) खेत को 'रस का अक्षयपात्र' कहने से यहाँ तात्पर्य यह है रचनाकार की रचना, जो कि हमेशा आनंद प्रदान करती है। यह रचना कभी न खत्म होने वाले अक्षय पात्र की तरह है जिसे जितना भी पढ़ो उसका आनंद कभी खत्म नहीं होता है।

घ) 'लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती' - पंक्ति का साहित्यिक रचना के संदर्भ में तात्पर्य यह है कि रचनाकार की रचना को हम जितने बार भी पढ़ें आनंद कभी कम नहीं होता है, आनंद ज्यों का त्यों बना ही रहता है।

उत्तर-8

(क) "कैमरे में बंद अपाहिज" करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। यह बात सत्य है। इस कविता में मीडिया द्वारा स्थापित कार्यक्रम में करुणा के माध्यम से मीडिया वालों की क्रूरता को सामने लाया गया है। अपाहिज से निम्न प्रश्न पूछे गए-

- क्या आप अपाहिज हैं?
- अपाहिजपन दुख देता है?
- दुख क्या है?
- अपाहिज होकर कैसा लगता है?

इन सब प्रश्नों से अपाहिज के प्रति मीडिया वालों की करुणा नहीं अन्यथा क्रूरता भाव का पता चलता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से वे सिर्फ पैसा कमाना चाहते हैं वरना ऐसे बेहूदे प्रश्नों की बौछार नहीं कि की जाती अपाहिज पर। अतः यह कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है।

ग) 'विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' - इसका आशय यह है कि जब बादल बरसते हैं तो छोटे-छोटे पौधों को ही लाभ प्राप्त होता है, उनका विकास होता है। अर्थात् जब क्रांति घटित होती है तो उन्हीं का लुटता है, जिनके पास कुछ होता है। सुविधा से परिपूर्ण लोग लुटे जाते हैं, उनकी सुविधा संपन्न ज़िंदगी बिगड़ने लग जाती है। समृद्धि से संपन्न लोगों की सारी संपत्ति और सुविधाएँ उनसे छिन जाती हैं और वह निम्न लोगों को, सामान्य जन को समर्पित हो जाती हैं। इस प्रकार से क्रांति होने से समृद्धि संपन्न लोगों का सब कुछ उनसे छिन जाता है और उसका लाभ सामान्य जन, निम्न लोगों को प्राप्त होता है। यही भाव इन पंक्तियों से उद्घाटित हुए हैं।

उत्तर-9

क) काव्यांश की रचना रुबाई छंद में हुई है। इस छंद की विशेषता यह है कि इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुकांतता पाई जाती है परंतु तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

ख) हिन्दी - निर्मल, जल
उर्दू - गेसुओं
लोकभाषा - घुटनियों, पिन्हाती

ग) भाव सौंदर्य: जब माँ बच्चे के प्रति अपना वात्सल्य प्रेम प्रकट करते हुए उसे अपनी घुटनियों के बीच में रखकर प्रेम से कपड़े पहनाती है तो बच्चा बड़े ही प्रेम से अपने माँ के मुँह को ताकने लगता है। वह भी अपने माँ के प्रति प्रेम प्रकट करता है।

उत्तर-10

क) लेखक- जैनेन्द्र कुमार
पाठ- बाज़ार दर्शन
यहाँ बाज़ार दर्शन में जैनेन्द्र कुमार ने प्रस्तुत गद्यांश में बाज़ार की सार्थकता एवं बाज़ारूपन की समस्या की चर्चा की है।

ख) बाज़ार को सार्थकता वे लोग प्रदान कर सकते हैं जो सिर्फ़ अपनी आवश्यकता की चीज़ों को बाज़ार से खरीदते हैं। जब वे सिर्फ़ आवश्यक चीज़ें खरीदेंगे तो इससे बाज़ारूपन नहीं बढ़ेगा और बाज़ार सार्थक बन पाएगा।

ग) 'पर्चेसिंग पावर' का तात्पर्य है- पैसे की गर्मी, पैसे का घमंड। जब लोग अपने पैसे की गर्मी दिखाने के लिए आवश्यकता से अधिक खरीददारी करते हैं तो इससे

संतुलन बिगड़ जाता है और बाज़ारूपन बढ़ने लग जाता है जिससे बाज़ार की सार्थकता नहीं बन पाती है। बाजार सार्थक नहीं हो पाता है।

घ) 'बाज़ार का बाज़ारूपन' कथन का आशय है जब बेचक अपनी वस्तुओं को आकर्षित बनाकर बेचता है या फिर ग्राहक आवश्यकता से अधिक खरीददारी करता है तो इससे बाज़ार का संतुलन बिगड़ जाता है। इसे ही 'बाज़ार का बाज़ारूपन' का बढ़ना कहते हैं।

उत्तर-11

क) 'भक्तिन' और 'महादेवी' दोनों के नामों में विरोधाभास है। महादेवी कहती हैं कि वे कभी अपने नाम की तरह महान देवी नहीं बन पाईं। और 'भक्तिन' के संदर्भ में यह बात कही जा सकती है कि उसका जीवन उसके नाम के अनुकूल नहीं था। भक्तिन का मूल नाम था - लक्ष्मी या लछमिन जिसका अर्थ है धन धान्य से परिपूर्ण परंतु उसका जीवन उसके नाम के विपरीत था। वह बहुत गरीब थी। उसकी विभिन्न समस्याओं की वजह से उसे गरीबी का जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था। अतः

दोनों के नाम में विशेष विरोधाभास था।

ग) लुट्टन पहलवान का अपनी ढोलक से एक अटूट रिश्ता था। ढोलक की आवाज उसकी नसों में सनसनी फैला देती थी, उसे उत्तेजित करती थी और उसमें जीवितता भर देती थी। वह जानता था कि उस ढोलक का असर ना सिर्फ उसपर बल्कि पूरे गाँव वालों पर भी पड़ता था। ढोलक की आवाज से गाँव के सभी बच्चे-बूढ़े-जवान के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था जो उनके कष्टों को उनसे दूर करता था। अपने बेटों के मरणासन्न अवस्था में और उनके मर जाने के बाद भी लुट्टन पहलवान जीवन की सरसता, उत्साह और उमंग को बनाए रखने के लिए ढोलक बजाता रहा।

घ) चार्ली चैप्लिन एक अभिनेता था जो स्वयं पर हँसने और दूसरों को हँसाने की कला के लिए प्रसिद्ध था। चार्ली चैप्लिन स्वयं पर सबसे ज्यादा तब हँसता है जब वह स्वयं को गर्वोन्मत, आत्म विश्वास से लबरेज

सफलता, सहजता, सभ्यता और समृद्धि की प्रतिमूर्ति के रूप में दिखाता है, स्वयं को सबसे अधिक शक्तिशाली और श्रेष्ठ बताता है, अपने को 'वज्रादपि कठोराणि' और 'मृदुनि कुसुमादपि' दृश्यों में दिखलाता है। तब वह ऐसी स्थिति प्रकट करता है कि हँसी छूट पड़ती है।

5) यह एक कटु सत्य है कि मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से जनता बँट जाती है। जनता तो बँट जाती है लेकिन ज़मीन के प्रति जनता का प्यार कभी नहीं बँटता है। सफ़िया और सिख बीबी, सफ़िया और पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी, सफ़िया और सुनीलदास गुप्त, इन सभी के उदाहरणों से यह पता चलता है कि स्वदेश-प्रेम कभी नहीं बँटता है। देश की सीमाओं के परे भी मन में जो प्रेम है वह कभी नहीं मिटता। सिख बीबी लाहौरी नमक चाहती है। सुनीलदास गुप्त ढाका के नारियल पानी को लाजवाब कहता है और पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी जामा मस्जिद के सामने अपना सिर झुकाता है। यह सभी इस बात के गवाह हैं कि देश की सीमाएँ कभी मनों को विभाजित नहीं कर सकती और मानचित्र पर लकीर मात्र खींच देने भर से ज़मीन और जनता नहीं बँट जाती है।

उत्तर-12

क) ऐन फ्रैंक के परिवार के भूमिगत सदस्यों की संख्या आठ थी। वह उन सदस्यों में सबसे छोटी उम्र की थी। उसकी माँ उसकी उपदेशिका थी और मिसेज वान, दान और मिस्टर डसेल इसे पसंद नहीं करते थे। इस उम्र में वह अपनी भावनाओं को किसके सामने प्रकट करती? पीटर था लेकिन कोई उसकी भावनाओं को नहीं समझता था इसलिए उसने अपनी डायरी किटी नामक गुड़िया को संबोधित कर के लिखी होगी।

ख) मुअनजो-दड़ो पाकिस्तान के राजस्थान प्रांत में स्थित है। यह अपनी विशाल एवं समृद्ध संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। वहाँ के नगर नियोजन अभी तक के सर्वश्रेष्ठ हैं। वहाँ पर जो जल सुविधा थी वह आज कहीं नहीं मिलती है। ये सभ्यता ही आज की सभ्यता के लिए योगदान देने वाले हैं। आज की संस्कृति के जिम्मेदार यही हैं, अतः यह प्रसिद्ध है।

उत्तर: ५

पुरुषों का अधिकार हमेशा से ही शारीरिक बल के कारण स्त्रियों पर है। वे अपनी शक्ति की वजह से ही स्त्रियों पर शासन करते हैं। स्त्रियाँ अपने सौंदर्य को बलि चढ़ाकर बच्चे जनती है। औरतों के द्वारा बच्चे जनने वक्त सही जाने वाली पीड़ा युध्द में होने वाली पीड़ा से भी अधिक है।

ऐन उन औरतों को और अधिक महत्व देती है जो अपनी सुंदरता को त्यागकर बच्चे जनती है। वह उन लोगों की भर्त्सना करती है जो स्त्रियों के योगदान को नहीं मानते। वह यह नहीं चाहती कि स्त्रियाँ बच्चे जनना बंद कर दें क्योंकि यह तो प्रकृति भी चाहती है।

आज की स्थिति में औरते अधिक गुणी है। उन्हें पुरुषों से भी अधिक अधिकार प्राप्त है। हर क्षेत्रों में महिलाएँ अव्वल हैं। आज महिलाएँ अपनी इच्छा से बच्चे जन सकती हैं और उन्हें हर प्रकार के अधिकार है प्राप्त हैं। वे अब पीड़ा सहे बिना भी बच्चे जन सकती है, वह स्वतंत्र है। आज न सिर्फ महिला बल्कि पुरुष भी बच्चे जन सकते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि आज पहले की स्थिति से बहुत परिवर्तन आया है।

उत्तर-14

को जूझ कहानी में लेखक की कविता के प्रति रुचि जगाने और कविता करना सिखाने में उसके अध्यापक का बहुत योगदान था। उसके मराठी के अध्यापक श्री न॰ वा॰ सौंदलगेकर ने उसे प्रेरणा दी। उन्हें लय, सुर, ताल, भाव आदि का पूर्ण ज्ञान था। वे कविता पाठ करते समय इसे पूरे सुर, लय और तुक के साथ गाते थे। वे बीच-बीच में अभिनय भी करते और यशवंत जैसे लेखकों के बारे में बताते थे। इससे लेखक मुग्ध हो गया। उन्होंने उसे सभा में कविता पाठ करने का मौका दिया जिससे उसका आत्मविश्वास जगा और वह कविता के प्रति रुचि लेने लगा।

उन्होंने अपनी मालती लता पर रचना की थी तब उसने जाना की कवि भी हाड़ माँस के बने होते हैं। इन सब कारणों से इसकी कविता के प्रति रुचि जागी।

ग) सिंधु-सभ्यता की संपन्नता हमें वहाँ के लोगों के द्वारा प्रयोग किए जाने वाली दैनिक वस्तुओं से पता चलता है। चाक पर मिट्टी के बर्तन, उनपर बने चित्र, ताँबे का दर्पण, मनके की माला, केश विन्यास, सोने के आभूषण, आदि से वहाँ की संपन्नता मालूम पड़ती है।

परंतु वहाँ न ही किसी विशेष वर्ग की निशानियाँ, मूर्ति, महंतों की समाधियाँ थी। वहाँ के नाव आकार में बहुत छोटे थे। वहाँ के राजा के सिर का मुकुट भी सिरपेंच से भी छोटी थी। वहाँ किसी विशेष का शासन नहीं था। इससे हम यह कह सकते हैं कि वहाँ भव्यता का कोई आडंबर नहीं था।

P.T.O.

खण्ड-क

उत्तर-1

क) गद्यांश का शीर्षक है 'सकारात्मक विचार'।

ख) कुछ लोगों के विचार हमेशा नकारात्मक होते हैं। उन्हें हर अधिकारी भ्रष्ट, हर नेता बिका हुआ और हर आदमी चोर दिखाई देते हैं, वे कभी सकारात्मक तरीके से विचार नहीं करते हैं। अतः लेखक ने कहा है कि कुछ लोगों को अपने चारों ओर बुराईयाँ देखने की आदत है।

ग) मीडिया आस-पास की बुराईयों को उजागर करने के साथ-साथ उसे सनसनीखेज बनाकर बार-बार प्रसारित करती हैं और लोगों की सोच को बनाने-बदलने में विशेष भूमिका निभाती है।

घ) अपनी टी॰ आर॰ पी॰ बढ़ाने के लिए कुछ चैनल खबरों को सनसनीखेज बनाकर 24x7 चैनलों में बार-बार प्रसारित करते हैं।
इससे आम नागरिक शंकालु हो जाता है हर व्यक्ति के बारे में एक ही प्रकार की सोच रखने लग जाता है।

ङ) 'आज भी सत्य और ईमानदारी का अस्तित्व है' - इसके पक्ष में तर्क -
- कुछ अधिकारी ऐसे हैं जो सिध्दांतों को रोज़ी रोटी से बड़ा मानते हैं
- वे मीडिया प्रचार के आकांक्षी नहीं हैं क्योंकि वे अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।

च) आज दुनिया में भारतीय अपनी निष्ठा, लगन और बुध्दि-पराक्रम के लिए जाने जाते हैं।

छ) किसी संपन्न देश के राष्ट्रपति का 'अपने नागरिकों से भारतीयों-जैसा बनने के लिए कहना यह सिध्द करता है कि वहाँ के नागरिकों में निष्ठा, लगनशीलता और बुध्दि पराक्रम की कमी है।

ज) लेखक भारतीय नागरिकों से अपनी सोच को समाप्त और देश के प्रति सकारात्मक रखने की और चरित्र को बेदाग रखने की आदत डालने की अपेक्षा कर रहा है।

झ) शब्द - प्रत्यय
नागरिक - इक
ईमानदारी - ई

ञ) शब्द - उपसर्ग
बेदाग - बे
अधिकारी - ~~क~~ अधिकार

ट) अपने ~~8~~ सिद्धांतों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानने वाले अधिकारी हैं।

उत्तर-2

क) यदि भारतीय नवयुवक दृढ़ निश्चय कर लें तो आँधियों को मोड़ सकते हैं, आसमान के तारे तोड़ सकते हैं, अपने सुयश का एक नया अध्याय इतिहास में जोड़ सकते हैं।

ख) नवयुवकों से खून-पसीना बहाकर, कठिन परिश्रम कर करोड़ों दीनों-हीनों के लिए कुछ अच्छा करने और धूल में भी सोने के फूल खिलाने का आग्रह किया जा रहा है।

ग) नवयुवक यदि परिश्रम करें तो देश की उन्नति होगी, उसे एक नया जीवन प्राप्त होगा, देश का विकास होगा।

घ) 'कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे' - का आशय है कि कठिन से कठिन कार्य को भी पूरा करना अर्थात अपनी मेहनत व लगन से असंभव को संभव करना।

ङ) एक दृष्टिहीन व्यक्ति ने एक बालक को कार के नीचे आने से बचाकर धूल में भी सोने के फूल खिला दिए।

खण्ड-ख

उत्तर: 6 ख)

i) पीत पत्रकारिता- ~~सबी~~ सनसनी, चकाचौंध या ग्लैमर फैलाने वाली पत्रकारिता को पीत पत्रकारित कहते हैं।

ii) संपादक के दो मुख्य ~~उत्तर~~दायित्व-
- समाचार का ~~संपा~~ संपादन करवाना
- संपादक मंडल में भाग लेकर आदर्शों के आधार पर नियम ~~ल~~ बनाना।

iii) समाचार- नवीन जानकारी प्राप्त करना ही समाचार है। यह जानकारी देश-विदेश से लेकर अपने आस-पास घटी घटना की भी हो सकती है।

iv) मुद्रित माध्यम की विशेषता यह है कि इसमें पहले जिंक की प्लेट पर छाप ली जाती है फिर कागज पर उसे मुद्रित किया जाता है।

v) इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता के कुछ कारण –
- देखने, सुनने और पढ़ने तीनों की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- सरलता से समाचार का आदान – प्रदान किया जा सकता है।

क) 'युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति'

यह एक बहुत बड़ी विडंबना है कि आज के युवा जिन्हें देश के विकास में अपना संपूर्ण योगदान देना चाहिए वे अपनी राह से भटकने लगे हैं। उनमें नशे की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। वे अपनी मानसिक हालत खोते जा रहे हैं। उन्हें न तो आज की खबर है ना कल का पता है। वे अपना भविष्य अपने ही हाथों बिगाड़ने में लगे हुए हैं। उन्हें न अपने परिवार की चिंता है या ना अपने और अपने भविष्य का ख्याल।

यह

वे तो बस अपनी धुन में चले जा रहे हैं। कुछ युवा अपने दुखों को दूर करने के लिए ड्रग्स का सेवन कर रहे हैं। वे ऐसा सोचते हैं कि वे इन नशीली चीजों के सेवन से अपने दिमाग की वृद्धि करेंगे। वे अपने साथ-साथ दूसरों को भी उसका सेवन करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। वे इस बात से अनजान हैं कि इसका उनके आने वाले भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ने वाला है। वे अपनी दिमागी हालत की जिम्मेदार खुद बनते जा रहे हैं।

इन सभी नशीली चीजों का प्रभाव यह पड़ेगा कि युवा वर्ग अपनी मानसिकता खो रहे हैं। अपनी राह से भटकने के कारण वे स्वयं की हानि तो कर ही रहे हैं, साथ ही देश के भविष्य को भी बिगाड़ रहे हैं। हमें इन नशीली पदार्थों के सेवन को रोकना होगा। इससे होने वाले नुकसानों को पूरी जगह प्रचार-प्रचार करना होगा। सरकार के द्वारा युवावर्ग को सचेत करने के लिए कुछ कार्यक्रमों का आयोजन भी करना होगा।

उत्तर-5

"मेरे स्कूल का पुस्तकालय"

पुस्तकालय का अर्थ होता है - पुस्तकों का भवन। यह वह भवन होता है जहाँ विद्या और ज्ञान का वास होता है। हमें पूरे विश्व भर का ज्ञान एक पुस्तकालय से सरलता से प्राप्त हो जाता है। हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में सभी प्रकार की पुस्तकें पाई जाती हैं। बच्चों के लिए तरह-तरह की रंगबिरंगी और किशोरों के लिए हर विषय से संबंधित और शिक्षकों के लिए भी किताबें अलग अलग हैं। किशोरों के लिए हर क्षेत्र, जीवविज्ञान, भौतिकी, रसायन से संबंधित किताबें हैं। सामान्य ज्ञान के लिए भी विभिन्न स्थानों से मंगवाए हुए किताब हैं। यह किशोरों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी बहुत फायदेमंद है। अनेक प्रसिद्ध कवियों एवं लेखकों जैसे रविन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद, सेक्सपियर के द्वारा सभी प्रसिद्ध किताबें हैं। जिसे जिस तरह की किताबें चाहिए होती हैं वह वह जाकर किताबें पढ़ सकता है। पुस्तकालय के शिक्षक सभी बच्चों को मनचाही पुस्तकें प्रदान करते हैं। इस प्रकार से पुस्तकों का ज्ञान बढ़ाया जाता है। छात्र-छात्राएँ अपने भविष्य को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं होती हैं क्योंकि यह

पुस्तकालय उन्हें सभी प्रकार के ज्ञान बाँटता है। मानसिक सोच को बढ़ाने में मदद करता है। इसके अलावा योगाभ्यास आदि के लिए एवं संतुलित आहार के लिए भी पुस्तकें जो सेहत के लिए आवश्यक होती है। हमारे विद्यालय का पुस्तकालय हर क्षेत्र में यहाँ के निवासियों को आगे बढ़ाता है।

उत्तर:4

परीक्षा भवन
रायगढ़

दिनाँक- 18/03/11

संपादक
जनसत्ता
नई दिल्ली

विषय- आतंकवाद की समस्या

पेक
स्थानी
सेहत
लय

महोदय,

हम आपके 'जनसता' समाचार पत्र के द्वारा आतंकवाद के होने वाली समस्या की ओर आपका एवं संपादक मंडल का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

गत कुछ दिनों से हमारे स्वच्छ शहर में आतंकवाद की समस्या बढ़ती ही जा रही है। कई जगह बम ब्लास्ट किए जा रहे हैं। दिन-ब-दिन लोगों की मौत होती जा रही है। कितने ही बच्चे अनाथ हो रहे हैं और बहुत सारे लोग घायल हो रहे हैं। ऐसा दुख और ज्यादा दिनों तक हमसे नहीं देखा जाएगा। इससे पूरे शहर के लोगों की चिंता बढ़ते जा रही है, वे घर से बाहर जाने को भी डर रहे हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि जितनी जल्दी हो सके इस समस्या का कोई समाधान सुझावें।

धन्यवाद!

भवदीया
अ.ब.स.
परीक्षा भवन, रायगढ़ (छ०ग०)
18/03/11

उत्तर-3

## संपर्क भाषा हिन्दी

मातृभाषा के रूप में: हिन्दी भाषा हमारी मातृ भाषा है। इसका प्रभाव सिर्फ हिन्दुस्तान में नहीं बल्कि अन्य देशों में भी फैला है। देश के अधिकतर जगहों पर हिन्दी भाषा को सर्वश्रेष्ठ भाषा का करार दिया गया है और इसे ही सबसे ज्यादा प्रयोग में लाया जाता है। देश के कई राज्यों में इसे साधारण बोलचाल की भाषा के रूप में भी अपनाया गया है। इसका सिलसिला सिर्फ गाँव या शहर तक सीमित न रहकर के पूरे देश में है।

संपर्क के क्षेत्र में: अधिकतर जगहों पर हिंदी भाषा को ही संपर्क भाषा के रूप में अपनाया गया है। कोई सूचना या संदेश अगर हिन्दी माध्यम में दिए जाते हैं तो वह लोगों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है। हम अपनी भावनाओं को हिंदी भाषा के माध्यम से

अधिक सरलता से पाठक या श्रोता तक पहुँचा सकते हैं। ये सर्वव्यापक भाषा है। विदेशों से यहाँ आने वाले व्यक्ति भी हिंदी को बहुत महत्व देते हैं और इस माध्यम को सीखने की चाह भी रखते हैं।

आनंद स्वरूप हिंदी: हिन्दी भाषा में लिखे गई या बोली गई बात किसी भी व्यक्ति को अन्य भाषा से अधिक आनंदित करती है। जब व्यक्ति हिंदी भाषा में समाचार, संदेश या सूचना प्राप्त करता है तो उसे अधिक रसिक बना देता है। इसे बोलने से अपनेपन की अनुभूति होती है।

उपसंहार: यह भाषा संपर्क भाषा के रूप में सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। यह सबसे सरल और आनंददेने वाली भाषा है। इससे मन की भावना सरलतम रूप में जागृत होकर बाहर आती है। अतः यह सर्वोत्तम संपर्क भाषा है।

[illegible]